Research Inspiration

(Peer-reviewed, Open accessed and indexed)

Journal home page: www.researchinspiration.com

ISSN: 2455-443X, Vol. 08, Issue-II, March 2023

वैश्विक स्तर पर पुलिस व्यवस्था का प्रारम्भः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
(Origin of Policing Globally: An Analytical Study)

Sudha kumari Narvariya[a,*]

[a] *Assistant Professor in Law, Govt. M.J.S. P.G. College, Bhind, Jiwaji University, Gwalior, M.P., (India)*

KEYWORDS

पुलिस व्यवस्था, पुलिस व्यवस्था का प्रारम्भ, वैश्विक स्तर पर पुलिस की स्थापना, पुलिस की कार्य प्रणाली

ABSTRACT

समाज को सुचारू से चलाने के लिए आवश्यक है, कि वह अपराधों को नियंत्रित करने के लिए किसी निकाय की स्थापना करें। जो कि समाज में आपराधिक गतिविधियों को विधि के अनुरूप नियंत्रित करे। ऐसा माना जाता है कि तथा पुलिस संगठन का प्रारंभ भारतवर्ष से हुआ है, और हमने ही संसार को पुलिस संगठन की शिक्षा सम्पूर्ण विश्व को दी है। डॉ. परिपूर्णानन्द वर्मा ने ''पुलिस'' शब्द की सही उत्पत्ति तथा उसका संगठन विश्व में सर्वप्रथम प्राचीन भारत में होना बताया है। बेबिलोनिया में, पुराने बेबिलोनियन सभ्यता के दौरान कानून प्रर्वतन कार्यो को सैन्य पृष्ठभूमि या शाही मेग्नेट के व्यक्तियों को सौपा गया था। लेकिन अंततः कानून प्रर्वतन के अधिकारियों का 'पक्कयूडस' के रूप में जाना जाता था, जो की शहरी तथा ग्रामीण दोनो बस्तियों में मौजूद होते थे। एक 'पोक्कयूडस' को अपराधों की जांच करने व गिरफतार करने की जिम्मेदारी सौपी गई थी। प्राचीन मिश्र में कानून प्रवर्तन के सबूत पुराने साम्राज्य काल में मिलते है। मिश्र के पुराने कार्यालयीन दस्तावेजों के अनुसार चौथे राजवंश के काल में 'जज कमाडेंट ऑफ द पुलिस' के रूप में जाने जाते थे। इस शोधपत्र के माध्यम से शोधार्थिनी द्वारा वैश्विक स्तर पर पुलिस की स्थापना एवं उनके कार्य प्रणाली का अध्ययन किया गया है।

यूरोप वालों के लिए '"पुलिस" शब्द लेटिन भाषा से आया हो पर भारतीयों को यह गर्व एवं अभिमान होना चाहिए की इस शब्द की रचना तथा पुलिस संगठन का प्रारंभ भारतवर्ष से हुआ है। और हमने ही संसार को पुलिस संगठन की शिक्षा दी।[1]

डॉ. परिपूर्णानन्द वर्मा ने ''पुलिस'' शब्द की सही उत्पत्ति तथा उसका संगठन विश्व में सर्वप्रथम प्राचीन भारत में होना बताया है। संस्कृत में ''पुर'' अर्थात नगर के निवासियों को 'पोर' कहते है, जबकि चाणक्य के अर्थशास्त्र में राजधानी के प्रधान शासक को पौर कहते थे। महाभारत युद्ध के बाद बृहदर्थ वंश के राज्य काल तक यानि ईसा से 700 वर्ष पूर्व तक भारत में ''पौर जनपद'' बिखरे हुए थे। समाज में सुरक्षा के लिए इन लोगों ने पुर-रक्षक या पुर-सेवक नियुक्त कर रखे थे, यही प्राचीन भारत की पुलिस थी।

''पुरवासियों के समूह को पौर कहते थे। इस पौर संगठन में पुर की रक्षा करने वालें को पोरूष कहने लगे थे। पुरूष शब्द का पुन्निस प्रयोग पाली भाषा में सम्राट अशोक ने किया था। सम्राट अशोक ने अपने राज्यारोहण के छब्बीसवें वर्ष में जो राजाज्ञा प्रसारित की थी उसमें पुलिस शब्द का स्पष्ट प्रयोग है।[2] अशोक की पुलिस उन दिनों जेलों का काम देखने के साथ-साथ, दण्ड विभाग, गृह-विभाग के अन्तर्गत न्याय तथा व्यवस्था भी देखती थी। पुलिस शब्द का रचियता प्राचीन भारत है, जिसका सर्वप्रथम संगठन यही पर हुआ।

अर्थववेद में अपराध शब्द आया है। जिसका अर्थ अर्थववेद के अनुसार अपने जीवन के लक्ष्य के विपरीत काम करना, पाप करना, गलत काम करना ऐसी स्थिति में अपराध की रोकथाम करने वाला दल पौरूष कहलाता था। प्रकाण्ड जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने सिद्ध किया है कि वेदों की रचना कम से कम

*** Corresponding author**

E-mail: sudhanarwariya@gmail.com (Sudha kumari Narvariya). https://orcid.org/0000-0002-5409-2321

DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v8n2.07

Received 20th Jan. 2023; Accepted 15th March 2023

Available online 30th March 2023

2455-443X /©2023 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

5000 वर्ष से कितने पहले की है, यह कहना कठिन है। यह भी सिद्ध हो चुका है कि भारत और मिश्र दोनों पहले मिले हुए थे अथवा एक ही सभ्यता के थे। यदि ईसा से 4800 या 4500 वर्ष पहले मिश्र देश अपनी कला तथा सभ्यता की चरम सीमा पर था तो यह युग भी भारत के बाद या समकालीन होगा। इसलिए भारत का शासकीय संगठन मिश्र में भी प्रचलित रहा होगा।[3] बेबिलोन तथा असीरिया (जिसे मेसोपोटानियन साम्राज्य कहते हैं) पश्चिमी एशिया का महान राज्य था, वह भी भारतीय आर्य सभ्यता का ही टुकड़ा था। स्पष्ट होता है कि मिश्र, बेबिलोन, असीरिया सभी प्राचीन सभ्यताऐं भारतीय सभ्यता के बिखरे हुए अंग थे और हमारी ही भाषा के शब्द वहॉ भी उपयोग में आते थे।

मध्य इटली के 'लैतियन' नामक मैदानी क्षेत्र की भाषा को 'इण्डो-यूरोपियन' (भारतीय यूरोपियन) भाषा 'लेटिन' कहते है। पश्चिमी विद्वानों के अनुसार यह भाषा आर्य भाषा तथा यूरोप की भाषाओं से निकली है। प्राचीन रोमन भाषा होने के कारण रोम के बढ़ते हुए प्रभाव के साथ यह यूरोप की राज्य भाषा हो गयी और वहां से स्पेन, पुर्तगाल के लोग इसे दक्षिणी विद्वान इस भाषा को 2000 वर्ष पुराना कहते है। जबकि प्राकृत संस्कृत पालि कम से कम 6000 से क्रमशः 3000 वर्ष पुरानी है। अतः लेटिन पोलिटिया शब्द भारतीय पोरूष पुलिस तथा पुरूष शब्द से निकला है।

प्राचीन चीन में हजारों वर्ष 'चू' और 'जिन' साम्राज्य में निरीक्षकों द्वारा कानून स्थापित करने वाली संस्थाए विकसित की गई थी। 'जिन' साम्राज्य में दर्जनों निरीक्षक चारों तरफ पूरे राज्य फेले हुए थे । प्रत्येक के पास सीमित अधिकार थे। वे स्थानीय जनपदाधीश द्वारा नियुक्त किये गये थे, जो कि उच्च अधिकारियों को जैसे की गर्वनर को सूचित करते थे, जिन्हें सम्राट द्वारा नियुक्त किया गया था। और वे अपने प्रान्त व नागरिकों की सुरक्षा की देखरेख करते थे। हर निरीक्षक के नीचे एक उपनिरीक्षक होता था जो उस क्षेत्र की कानून व्यवस्था को बनाए रखने में मदद करता था। कुछ निरीक्षक जॉच की जिम्मेदारी उठाते थे तथा कुछ जासूस की भूमिका निभाते थे। कुछ निरीक्षक महिलाए भी होती थी।4 स्थानीय नागरिक अपराधों की शिकायत कर सकते थे। बाद में जनपद प्रणाली कोरिया और जापान जैसी अन्य संस्कृतियों में भी फैल गयी।

बेबिलोनिया में, पुराने बेबिलोनियन सभ्यता के दौरान कानून प्रर्वतन कार्यो को सैन्य पृष्ठभूमि या शाही मेग्नेट के व्यक्तियों को सौपा गया था। लेकिन अंततः कानून प्रर्वतन के अधिकारियों का 'पक्कयूडस' के रूप में जाना जाता था, जो की शहरी तथा ग्रामीण दोनो बस्तियों में मौजूद होते थे। एक 'पोक्कयूडस' को अपराधों की जांच करने व गिरफतार करने की जिम्मेदारी सौपी गई थी।[5]

प्राचीन मिश्र में कानून प्रवर्तन के सबूत पुराने साम्राज्य काल में मिलते है। मिश्र के पुराने कार्यालयीन दस्तावेजों के अनुसार चौथे राजवंश के काल में 'जज कमाडेंट ऑफ द पुलिस' के रूप में जाने जाते थे।[6] पुराने साम्राज्य की अवधि के अंत में पांचवे राजवंश के दौर में लकडी के डंडो से लेस अधिकारियों को सार्वजनिक स्थानों जैसे बाजारों, मंदिरों पार्को की रखवाली करने का काम सौपा गया था। उनके पास प्रशिक्षित बंदर, बबून्स, और कुत्तों को अपराधियों को पकडने में इस्तेमाल किया गया था। पुराने साम्राज्य के पतन के बाद पहली मध्यवर्ती अवधि (2181-2040 ओ.बी.सी.) में प्रवेश के बाद उसी प्रतिरूप को लागू किया गया। उस समय अवधि बेडोइन्स (उस समय अवधि की पुलिस) को राज्य की सीमाओं की रक्षा और व्यापारी कारवां की रक्षा के लिए रखा जाता था। मध्य साम्राज्य अवधि के दौरान एक पेशेवर पुलिस बल बनाया गया था। नये साम्राज्य अवधि (1570-1069 ओ.बी.सी.) के दौरान उस समय की पुलिस बल में और सुधार किया गया था। पुलिस अधिकारियों ने पूछताछकर्ताओं, अभियोजकों और अदालत के जमानतदारों रूप में कार्य किया, और न्यायधिशों द्वारा सौपें गये दंड को लागू करने की जिम्मेदारी निभायी। इसके अलावा विशेष इकाई बनाई गई थी, जो पुजारियों के रूप में प्रशिक्षित पुलिस अधिकारियों की एक विशेष इकाई थी वह मंदिरो और मकबरों की रखवाली के लिए जिम्मेदार थी और त्योहारों पर अनुचित व्यवहार करने वालों को रोकने के साथ-साथ धार्मिक संस्कारों का अनुयचित पालन करने वालों को रोकने का कार्य भी करती थी। अन्य पुलिस इकाईयों को कारवां की सुरक्षा, राज्य की सीमाओं की सुरक्षा, शाही परिवार के सामानों की सुरक्षा, आवागमन के दौरान गुलामों की सुरक्षा, प्रशासनिक इमारतों की सुरक्षा तथा नील नदी की रखवाली करने का काम सौंपा गया था।

प्राचीन ग्रीस में, पुलिस के रूप में मजिस्ट्रेटो द्वारा सार्वजनिक

स्वामित्व वाले दासों का उपयोग किया जाता था। एथेंस में 300 स्काइथियन दासों (रॉड बियरर्स) के एक समूह का उपयोग आदेशों को मानने और भीड़ को नियंत्रित करने के लिए सार्वजनिक बैठकों की रक्षा के लिए किया जाता था, और अपराधियों से निपटने, कैदियों को संभालने और गिरफतारियॉ करने में भी सहायता ली जाती थी स्पार्टा में एक गुप्त पुलिस बल था जिसे क्रिप्टिया कहा जाता था।[7]

रोमन साम्राज्य में आर्मी ही पुलिस ही संगठन का कार्य करती थी। नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए शहरों में स्थानीय चौकीदारों को काम पर रखा जाता था। उस समय में जनपदाधीश ही अपराध की पैरवी करता था। अगस्तस के शासन के दौरान जब राजधानी में 1 मिलीयन आबादी बढ़ गयी थी तब वहां 14 बाई बनाए गए थे। वार्डो को 1000 लोगों के सात दस्तों द्वारा संरक्षित किया गया था जिन्हें ''बिजील'' कहा जाता था जिनका कर्य अग्निशामक, रात्रि चौकीदार का था। इनके कार्यो में चोरो और डकैतों को तथा भाग गए दासों को पकड़ना था।

फारसी साम्राज्य में अच्छी तरह से संगठित पुलिस बल था। इस महत्वपूर्ण स्थान पर एक पुलिस बल मौजूद था। शहरों में प्रत्येक वार्ड एक पुलिस अधीक्षक के आदेश के तहत था जिसे 'कुईपन' के रूप में जाना जाता था। यहां पर पुलिस अधिकारियों ने ही अभियोजन पक्ष के रूप में काम किया और अदालतों द्वारा लगाए गए दंडों का पालन कराया।[8]

प्राचीन इजराइल में राजपरिवार की सुरक्षा सार्वजनिक कार्यो के गिरानी करने और अदालतों के आदेश को लागू करने की जिम्मेदारी कुछ अधिकारियों पर थी, जो शहरी क्षेत्र की रक्षा करते थे। उन्हें हिबरू बाइबल में बार-बार उल्लेख किया गया है और यह प्रणाली रोमन शासन की अवधि में भी चली। पहली सदी के यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने कहा की प्रत्येक न्यायधीश के पास उसकी कमान में दो ऐसे अधिकारी होते थे। शहरों व कस्बों में रात के चौकीदार भी थे। जेरूसलम में मंदिरों की सुरक्षा के लिए विशेष मंदिर पुलिस थी। तलमुड ने यहुदी समुदायों में इजराइल और बेबिलोन की भूमि पर स्थानीय पुलिस अधिकारियों का उल्लेख किया है जिन्होनें आर्थिक गतिविधियों निगरानी की थी । तल्मुड ने उपनगरों में शहर के चोकीदारों और घुड़सवारों तथा सशस्त्र चौकीदारों का भी उल्लेख किया है।[9]

पूर्व ओपनिवेशिक अफ्रीका के कई क्षेत्रों विशेष रूप से पश्चिम और मध्य अफ्रीका 'गिल्ड' जैसे गुप्त समाज, कानून प्रर्वतक के रूप में उभरे। एक अदालती प्रणाली या लिखित कानूनी कोड की अनुपस्थिति में उन्होनें पुलिस का उपयोग किया।[10] संधाई साम्राज्य में अधिकारियों को पुलिस के रूप में कार्य करने वाले, ''असारा-मुनिदियोस'' या ''एनफोर्सस'' के रूप में जाना जाता था।

पूर्व कोल्म्बो मेसोअमेरिकन सभ्यताओं ने भी कानून प्रर्वतनों का आयोजन किया था। माया सभ्यता के शहर-राज्यों में कांस्टेबलों को 'टयूपिल्स' के साथ-साथ 'बेलिफ्स' भी कहा जाता था।[11]

मध्ययुगीन स्पेन में सेंटास हेरमीडेंड्स (''पवित्र भाईचारा'') नाम सशस्त्र व्यक्तियों का एक संघ था जो की शांति बनाए रखने का कार्य करता था। यह संघ दस्यु और ग्रामीण क्षेत्रों अपराधियों के खिलाफ कार्यवाही करता था। पुरे मध्य युग में ऐसे गठबंधन अक्स कस्बों के संयोजन से बनाते थे।

मध्ययुगीन इस्लामिक खलीफाओं में, पुलिस को 'शूरता' (सामान्य अरेबिक भाषा में पुलिस) के रूप में जाना जाता था। यह 'अब्बासिद और उम्मयद खलीफा' के नाम से जाना जाता था। उनकी प्राथमिक भूमिकाओं में पुलिस और आन्तरिक सुरक्षा बलों के रूप में कार्य करना था, लेकिन उनके अन्य कर्तव्य सीमा शुल्क, कर प्रर्वतन, तथा शासकों के लिए अंगरक्षक के रूप में कार्य करने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था। 10वीं शताब्दी से 'शूरता' का महत्व कम हो गया क्योंकि सेना ने आंतरिक सुरक्षा कारणों को ग्रहण किय, जबकि शहर अधिक स्वायत हो गए और स्थानीय स्तर पर अपनी स्वयं की पुलिसिंग आवश्यकताओं को नियंत्रित किया। इसके अलावा ''मुहतासिव''[12] कहे जाने वाले अधिकारी मध्ययुगीन इस्लामिक दुनिया में सामान्य तौर पर बाजारों की निगरानी और आर्थिक गतिविधियों के लिए जिम्मेदार थे।

मध्य युग के दौरान फ्रांस में पुलिस की जिम्मेदारी दो अधिकारियों पर थी, जिन्हें फ्रांस का मार्शल और फ्रांस का ग्रांड कांस्टेबल कहा जाता था। फ्रांस के मार्शल की सेन्य पुलिसिंग की जिम्मेदारियों को मार्शल प्रवोस्ट को सोंपा गया था, जिनके बल को मार्शल के रूप में जाना जाता था। क्योंकि इसका अधिकार अंततः मार्शल से लिया गया था।

इग्लैण्ड में एक अधिकारी को 'शायर-रीव' के नाम से जाना

जाता था, जिससे 'शेरिफ' शब्द विकसित हुआ शायर-रीव के पास पॉज कोमिटेट्स की शक्ति थी जिसका अर्थ है कि वह एक अपराधी का पीछ करने के लिए अपने शायर के लोगों को इकट्ठा कर सकता था।[13] 13 वी शताब्दी के अन्त तक, ऑफिस ऑफ कान्सटेबल विकसित हुआ। कांस्टेबलों की मुख्य जिम्मेदारियों के रूप में शाही परिवार की सुरक्षा करने के साथ-साथ शहर की सुरक्षा करना भी था। कान्सटेबल को हर साल उसकी पल्ली द्वारा चुना जाता था।

1252 के आर्डिनेस (एजेजिज ऑफ आर्मस) में जिसे अंग्रेजी पुलिस के शुरूआती उपाख्यानों में से एक के रूप में उद्धृत किया गया है। जिसमें बताया गया है कि इसमें कांस्टेबलों की नियुक्त कर उन्हें हथियार दिये गये जिससे वह अपराधियों को पकड़कर शेरिफ तक पहुंचा सके। 1285 के विचेस्टर को नोंमान विजय और मेट्रोपोलिटन पुलिस अधिनियम 1829[14] को केंट्री पुलिसिंग को विनियमित करने वाले प्राथमिक कानून के रूप में भी उद्धृत किया गया है। लगभग 1500 निजी चौकीदारों को निजी व्यक्तियों और संगठनों द्वारा पुलिस कार्यो को करने के लिए वित्त पोषित किया गया, बाद में उन्हें चार्लीज उपनाम दिया गया।

''पुलिस'' शब्द का सबसे पहला अंग्रेजी उपयोग 1642 में प्रकाशित इंग्लैण्ड के कानून के संस्थानों का दूसरा भाग पुस्तक में वर्णित मंदिर ''पोल'' में किया गया है।[15]

प्रारंभिक आधुनिक पुलिस का पहला केन्द्रीय संगठित और वर्दीधारी पुलिस बल 1667 में फ्रांस के राजा लुईज.ग्प्ट की सरकार द्वारा बनाया गया । 15 मार्च 1667 में पेरिस की पार्लिमेन्ट ने शाही फैसले को पंजीकृत कर 'लेफिटनेट जनरल ऑफ पुलिस' का कार्यालय बनाया। ग्रेबियाल निकोलस डी ला रिनी' दुनिया के पहले वर्दीधारी पुलिस के संस्थापक थे। जिनके पास 44 पुलिस कमिश्नर थे। 1709 में इन कमिश्नरों ने अपने अधीन पुलिस निरीक्षकों को रखा। पेरिस को 16 जिलों में विभाजित कर, हर एक जिले में कए पुलिस निरीक्षक को रखा गया । पेरिस पुलिस बल की योजना को अक्टॅबर 1699 के शाही संस्करण (निर्देश) द्वारा फ्रांस के बाकी हिस्सों में विस्तारित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप लेफिटनेंट बनाए गये। फ्रांसीसी क्रांति के बाद नेपोलियन 1 ने 17 फरवरी 1800 को पुलिस के रूप में 5000 से अधिक निवासियों के साथ पेरिस और अन्य शहरों में पुलिस पुर्नगठन किया। 12 मार्च 1829 को एक गर्वमेंट डिक्री ने फ्रांस में पहली वर्दीधारी पुलिस का निर्माण किया, जिसे सार्जेट डेविले (शहर सार्जेट) के रूप में जाना जाता है। पेरिस प्रीफेक्चर ऑफ पुलिस की बेबसाईट का दावा था कि वे दुनिया में पहले वर्दीधारी पुलिसकर्मी थे।[16]

सन् 1828 में लन्दन के के 10 मील के दायरे में 45 परगनों में नजी रूप से वित्त पोषित पुलिस इकाइया थी। 'पुलिस' शब्द को 18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी से अंग्रेजी भाषा में उधार लिया गया था। लेकिन लंबे समय तक यह केवल फ्रेंच और महाद्वीपीय यूरोपीय पुलिस बलों पर लागू होता था। 19वी शताब्दी से पहले युनाइटेड किंगडम में सरकारी दस्तावेजों में दर्ज ''पुलिस'' शब्द का पहले उपयोग 1714 में स्काटलैंड के लिए पुलिस आयुक्तों की नियुक्तियों और 1798 में समुद्री पुलिस के निर्माण में किया गया था।

मेट्रोपोलिटिन पुलिस उक्ट 1829 को शाही स्वीकृति दी गई और मेट्रोपोलिटन पुलिस सेवा 29 सितम्बर 1829 को लंदन में स्थापित की गई जिसे दुनिया में पहला मोर्डन और पेशेवर पुलिस काल कहा जाता है।[17] रार्बट पील को व्यापक रूपा से मोर्डन पुलिसिंग का जनक माना जाता है।[18] पील का सिद्धांत था कि ''पुलिस जनता है और जनता ही पुलिस''। मेट्रोपोलिटिन पुलिस कई देशों में पुलिस बलों के के लिए एक मॉडल बन गई जैसे की संयुक्त राज्य अमेरिका और अधिकांश ब्रिटिश साम्राज्य19 वर्तमान में स्काटलैड यार्ड मेट्रोपोलिटिन पुलिस का मुख्यालय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ. परिपूर्णानन्द वर्मा, भारतीय पुलिस (ई.पू. 3000 से 1984 तक) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1984।
2. डॉ. परिपूर्णानन्द वर्मा, भारतीय पुलिस (ई.पू. 3000 से 1984 तक) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1984, पृ.2।
3. Whittaker, Jake; UC Davis East Asian Studies "university of California, Davis. October 7, 2008.
4. Reinhard pringruber; Policeman in Ist millennium BC bakylonia, ANE today (The Ancient Near east today). August 2015, Vol III, No.8.
5. Joshua.J.Mark; Police in Ancient Egypt, Ancient History encyclopedia.21 July 2017.
6. Louise Park and Timothy love, Ancient and Medieval people. The Spartam Hoplites, Marshall Cavendish Benchmark New York. P.4.
7. S.J. Bulsarai The law of the Ancient Persians. Article pars Times Bambay.

8. Police Law, Jewish Enchlopaedia.
9. Philip J. Alder, Randall; World Civilization, cangage learning Baston U.S.A., Eighth Edition, 2016, P221
10. Dr. Malti Malik; History of the world, New saraswati house India, Pvt. Ltd, New Delhi, 2016,P206
11. A Muhtasib was a superviser of bayar and trade in the medival Islamic countries.
12. M.Karen Hess, Chiristene Hess, Introduction to law enforcement and Criminal justice, Cengage learning, USA, 2012,P.7
13. Charles tempest Clarkson, J.Hall Richardson, Police Volume 17 of crime and punishment in England GArland Publisher 1829, P.1
14. Sir Edward coke; The second part of the Institutes of the laws of England. Printed by M. Filsher, London, 1642 P.77
15. Prefectur - police paris interieur gouv. fr., 6 May 2008
16. Bernard Porter; The vigilant state, The lendon Metro Politan Police special Branch before the first world war, The Boydell press wood bridge, London 1987, P.3.
17. K.R.E. MC Cormic; understanding policing, Canadian scholor press Toronto 1992, P284
18. John.S. Dempsy, Linda S.Forst; An Introduction to policing,Eight edition, cengage learning , baston, USA, 2014, P.7

****